पुस्तक परिचय

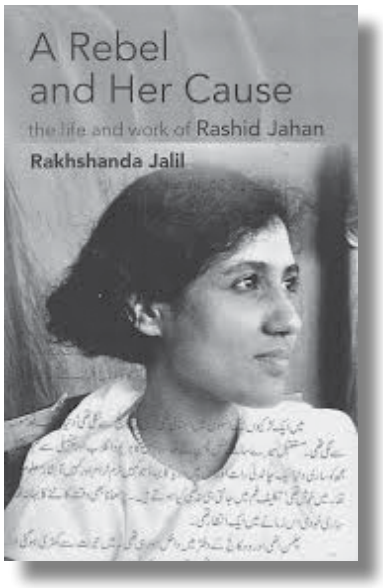

पुस्तक : अ रेबल एंड हर कॉज़- द लाइफ़ एंड वर्क्स ऑफ़ रशीद जहां

लेखक : रख्शंदा जलील

भाषा : अंग्रेज़ी

प्रकाशन : विमेन अनलिमिटेड, नई दिल्ली

रशीदा जहां, डाक्टर और लेखिका को अनेक कारणों से जाना जाता है। 1932 की सर्दियों में चार दोस्तों, जिनमें एक औरत भी थी ने एक कहानी संग्रह 'अंगारे' निकाला। उर्दू ज़बान में लिखी इस किताब की कहानियों में मौजूदा सामाजिक असमानताओं, धार्मिक कट्टरवाद और पितृसत्तात्मक समाज में औरतों के शोषण के प्रति आक्रोश व्याप्त था। इस किताब को अखिल भारतीय शिया सम्मेलन की समिति मीटिंग में 'अश्लील दस्तावेज़' का नाम देकर, समूचे मुसलमान समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के आधार पर प्रतिबंध लगा दिया गया। मौलवियों ने फतवे जारी कर दिए और समाज में उथल-पुथल मच गई। पुस्तक लिखने वाले साथियों में से इकलौती महिला, रशीद जहां पर ख़ास लानत भेजी गई। उसके पिता द्वारा चलाए जा रहे लड़कियों के स्कूल को रंडीखाना करार दे दिया गया।

विडम्बना तो यह है कि इस किताब को निकालने के पीछे का मकसद बेहद सीधा-साधा था। रशीद जहां पर लिखी गई किताब में लेखिका, रख्शंदा जलील का कहना है कि 'अंगारे' के पीछे का मक़सद सिर्फ़ कुछ अलहदा तरह के लेखन को बढ़ावा देना ही था। इरादा किसी को नाराज़ करने या सनसनी फैलाने का नहीं था। रशीद जहां और उनके साथियों की मंशा लोगों को रोज़मर्रा के जीवन में आए बनावटीपन और यौनिक दमक को कुरेदना था। उनका कोई समाज सुधार या आंदोलन करने का इरादा नहीं था।'

रशीद जहां द्वारा लिखी गई कुछ अन्य कहानियां और लेख में कोई ख़ास नफ़ासत या साहित्यिक उत्कृष्टता दिखाई नहीं देती। वह तो केवल हालातों का बयान करना चाहती थीं जिससे स्त्री और पुरुष खुद बदलाव लाने के लिए तत्पर हो सकें।

रशीद जहां अपने समय से कुछ आगे चलने वाली महिला थी। इस समय के 'बोल्ड' समझने वाले विषयों पर लिखने के अलावा वे एक प्रगतिशील और गहन चेतना रखती थीं। अपनी किताब में जलील हमारा परिचय घटनाओं और कहानियों के माध्यम से एक ऐसी शख़्सियत से कराती हैं जो उस दौर के मुद्दों में खासी दिलचस्पी रखती थी, और जो नारीवाद, उपनिवेशवाद, लैंगिक न्याय, सामाजीकरण और साम्यवाद की बहसों से जुड़ी थीं। उन्होंने उस समय कम्युनिस्ट पार्टी में शिरकत की जिस समय औरतों को घर से बाहर निकालने की आज़ादी नहीं थी।

रशीद जहां पेशे से एक डाक्टर थीं और इसलिए वे अपने महिला मरीज़ाओं की शारीरिक तकलीफ़ों के साथ-साथ उनकी मानसिक त्रासदी को भी बखूबी समझती थीं। शिक्षा की कमी, बाल विवाह, परिवार नियोजन का अभाव जैसे अनकहे मुद्दों पर रशीद जहां ने बड़ी बेबाकी और संवेदनशीलता के साथ लेख और कहानियां लिखीं।

जलील द्वारा रशीद जहां के जीवन से हमें रूबरू कराने में यह पुस्तक कामयाब होती है पर इसमें रशीद जहां के जीवन की एक आधा-अधूरी सी तस्वीर मिलती है। फिर भी इस किताब का महत्व इस सच्चाई को उजागर करने में है कि एक औरत ने किस तरह अपनी ज़िंदगी और लेखन के ज़रिए दूसरी लेखिकाओं के लिए सुगम रास्ते बनाए। 'मुसलमान लड़कियों के लिए रशीद जहां ने अनेक संभावनाओं के दरवाज़े खोल दिए' ऐसा रख्शंदा जलील का मानना है। रशीद जहां की इस जीवनी को हमारे सामने लाकर लेखिका ने अन्याय और बदलाव को दिशा देने का इरादा रखने वाली लेखिकाओं की एक कड़ी को चिन्हित करने का सफल काम किया है।

जलील ने एक कुशल अनुवादक की हैसियत से रशीद जहां की कहानियों की निहित ताक़त को पाठकों तक पहुंचाने का एक ईमानदार प्रयास किया है। फिर भी कहीं-कहीं उर्दू भाषा की बारीकियों की कमी खलती है। पर मूल लेखन को तीखापन और भाषा की गहराई को शब्द-ब-शब्द अनुवाद में उतार पाना हमेशा संभव नहीं हो पाता। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए यह माना जा सकता है कि रशीद जहां की ज़िंदगी और उनके काम को इस दस्तावेज़ के ज़रिए जानने का यह सराहनीय प्रयास है।

–जुही जैन

जुही जैन *नारीवादी कार्यकर्ता व हम सबला की सम्पादक है।*